ISSN 0976- 8300

विश्व आयुर्वेद परिषद्
पत्रिका

वर्ष - 12 अंक - 11, सम्वत् 2072 कार्तिक नवम्बर, 2015

शरद ऋतु

A Reviewed
Journal of Vishwa Ayurved Parishad

₹50/–

पं. गंगा सहाय पाण्डेय स्मृति व्याख्यान एवं आयुर्वेद स्नातक अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह, वाराणसी की झलकियाँ

देश के विभिन्न प्रान्तों में धन्वन्तरि जयन्ती की झलकियाँ

प्रकाशन तिथि - 15.11.2015 ISSN 0976- 8300
पंजीकरण संख्या - LW/NP507/2009/11 आर. एन.आई. नं. : यू.पी.बिल./2002-9388

भाई उद्धवदास मेहता स्मृति स्नातकोत्तर अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता -2015
पुरस्कार वितरण एवं धन्वन्तरि जयन्ती, भोपाल की झलकियाँ

विश्व आयुर्वेद परिषद् के लिए प्रोफेसर सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र, कार्यकारी अध्यक्ष द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित कराकर, 1/231 विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - प्रोफेसर सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र

विश्व आयुर्वेद परिषद पत्रिका
Journal of Vishwa Ayurved Parishad

वर्ष - 12, अंक - 11 कार्तिक नवम्बर - 2015

संरक्षक :
- डॉ० रमन सिंह (मुख्य मंत्री, छत्तीसगढ़)
- प्रो० योगेश चन्द्र मिश्र राष्ट्रीय अध्यक्ष

प्रधान सम्पादक :
- प्रो० सत्येन्द्र प्रसाद मिश्र

सम्पादक :
- डॉ० कमलेश कुमार द्विवेदी

सम्पादक मण्डल :
- डॉ० पुनीत कुमार मिश्र
- डॉ० अजय कुमार पाण्डेय
- डॉ० विजय कुमार राय
- डॉ० मनीष मिश्र
- डॉ० आशुतोष कुमार पाठक

अक्षर संयोजन :
- बृजेश पटेल

प्रबन्ध सम्पादक :
- जितेन्द्र अग्रवाल

सम्पादकीय कार्यालय :
विश्व आयुर्वेद परिषद् पत्रिका
1/231, विरामखण्ड, गोमतीनगर
लखनऊ - 226010 (उत्तर प्रदेश)
लेख सम्पर्क- 09415618097, 09336913142
E-mail - vapjournal@rediffmail.com
dwivedikk@rediffmail.com
drramteerthsharma@gmail.com

सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानद एवं अवैतनिक है। पत्रिका के लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

Contents

1- EDITORIAL **2**

2- A SUB-CHRONIC TOXICITY STUDY OF RASA-SINDOOR ON VITAL ORGANS IN ALBINO RATS
- Anita Kanojia, Sachin Agarwal, Vinod Kr. Gothecha **3**

3- CONCEPT OF BALANCE DIET AND PRESCRIBED METHOD OF TAKING FOOD IN AYURVEDA
- Bhoopendra Mani Tripathi, D.C.Singh, Suresh Chaubey **11**

4- VIRUDDHAHAR IN PRESENT ERA
- Anumeha Joshi, Rakesh Jain **15**

5- REVIEW OF SOME AYURVEDIC PLANTS AS WOUND HEALER
- Srivastava Prabhat Kr., Srivastava Smriti Singh A. K. **22**

6- JEERAKADI MODAKA: AN AYURVEDIC REMEDY IN UDVARTINI (PRIMARY DYSMENORRHEA)
- Upasana, Kalpana Sharma **27**

7- ROLE OF SWALP SURAN MODAK AND SAMANGADI CHURNA IN THE MANAGEMENT OF RAKTARSHA (BLEEDING PILES)
- Vineet Jain, Premsukh, M.K.Shringi **31**

8- NECESSITY OF BASIC SCIENCES FOR THE DEVELOPMENT OF AYURVEDA
- Saurabh **37**

9- परिषद् समाचार **46**

परिषद् समाचार

धन्वंतरि जयंती एवं भाई उद्धवदास मेहता स्मृति अखिल भारतीय आयुर्वेद स्नातकोत्तर निबन्ध प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण व विद्वत सम्मान समारोह, भोपाल

देश के सभी राज्यों में केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान केन्द्र स्थापित किये जायेंगे। इसके अलावा योग की तरह आयुर्वेद को भी अन्तराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया जायेगा। उक्त उद्गार केन्द्रीय आयुष मन्त्री–श्रीपाद नाईक ने यहां भाई उद्धवदास मेहता स्मृति–न्यास एवं विश्व आयुर्वेद परिषद् के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित धन्वतंरि जयन्ती के अवसर पर आयुर्वेद के चिकित्सकों के सम्मान एवं स्नातकोत्तर निबन्ध प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अपने सम्बोधन में व्यक्त किया। श्री नाईक ने कहा कि सी.सी.आई.एम. द्वारा शिक्षकों के लिए नये वेतनमान का प्रारूप तैयार किया जा रहा है, जिसे राज्यों में भी लागू करना अनिवार्य होगा। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही केन्द्रीय आयुर्वेद विश्वविद्यालय की स्थापना भी की जायेगी। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मन्त्री, आयुर्वेद श्री शरद जैन ने कहा कि प्रदेश के हर आयुर्वेद महाविद्यालय में शोध केन्द्र विकसित किये जायेंगे। कार्यक्रम को महापौर आलोक शर्मा, सांसद–मेघराज जैन, समाजसेवी–ओम मेहता, साहित्यकार–कैलाश पंत भी मौजूद थे। आभार प्रदर्शन इमामी लिमिटेड (झंडु) के उपाध्यक्ष डॉ. पवन शर्मा ने व्यक्त किया। उन्होंने अपने माता–पिता की स्मृति में श्रेष्ठ आयुर्वेद शिक्षक पुरस्कार एवं श्रेष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक पुरस्कार प्रारम्भ करने की घोषणा की। जिनमें निम्न चिकित्सकों को सम्मानित भी किया गया– स्व0 श्री गणपति लाल शर्मा (स्व0 डॉ0 जी.एल. शर्मा), डॉ. अरूण जोशी (इंदौर), डॉ. अशोक श्रीवास्तव (ग्वालियर), डॉ. योगेन्द्र निर्मल (बालाघाट), डॉ. भगवती प्रसाद त्रिपाठी (रीवा), डॉ. अजीतपाल सिंह चौहान (इंदौर), डॉ. सतीशचन्द्र शर्मा (भोपाल), डॉ. पवन गुरू (भोपाल), डॉ. उत्कर्ष कल्याणकर (ग्वालियर), डॉ. भगववती प्रसाद शर्मा (भोपाल), डॉ. ओम प्रकाश व्यास (उज्जैन), डॉ. आर. पी. सिंह (भोपाल), डॉ. गीता सुकुमारन (भोपाल), डॉ. रवि कुमार श्रीवास्तव (जबलपुर) तथा साथ ही निबन्ध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये गये। पहला पुरस्कार स्वर्ण पदक–डॉ. सौरभ चौरसिया (उड्डपी), द्वितीय पुरस्कार रजत पदक–डॉ. पूनम भोलक (बंगलौर) तथा तृतीय पुरस्कार कांस्य पदक – डॉ. पवन सिंह (केरल) को प्राप्त हुआ।

वाराणसी में धन्वन्तरि जयन्ती, डॉ0 गंगा सहाय पाण्डेय स्मृति व्याख्यान एवं अखिल भारतीय आयुर्वेद स्नातक निबन्ध प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

वाराणसी, 7 नवम्बर 2015 को विश्व आयुर्वेद परिषद के तत्वाधान में धन्वन्तरि जयन्ती, डा0 गंगा सहाय पाण्डेय स्मृति व्याख्यान एवं अखिल भारतीय आयुर्वेद स्नातक छात्र निबन्ध प्रतियोगिता 2015 का पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन डायमण्ड होटल, भेलुपुर में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो0 बी0 एम0 शुक्ला, पूर्व कुलपति पं0 दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने बताया की भगवान धन्वन्तरि का अवतरण समुद्र मन्थन के समय हुआ था जो कि अपने हांथो में अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे तथा इसे जनसामान्य के लिये विश्व को उपलब्ध कराया था। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुये प्रो0 शिवकुमार मिश्र, अतिथि प्रोफेसर, यूरोपीयन एकेडमी आफ आयुर्वेद, जर्मनी ने कहा कि आयुर्वेद के वात, पित्त, कफ के सिद्धान्त को जीनोम लेवल पर सही पाया जा रहा है। उन्होनें बताया कि आयुर्वेद के प्रकृति के सिद्धान्त के आधार पर विश्व अपनी जीवनशैली अपना रहा है तथा स्वास्थ्यलाभ ले रहा है। प्रो0 मिश्र ने विश्व में आयुर्वेद के प्रचलन एवं स्वीकार्यता पर भी समारोह में प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि प्रो0 यदूनाथ प्रसाद दूबे, कुलपति सं0सं0वि0वि0,वाराणसी ने अपने उद्बोधन में स्पष्ट किया कि आयुर्वेद हमारी प्राचीन एवं विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है तथा अन्य सभी पद्धतियां इसी से उत्पन्न हुयी हैं। आयुर्वेद को राज्य एवं केन्द्र सरकारों की उपेक्षा के कारण हमारे देश में उचित स्थान नहीं मिल पा रहा है। अब समय की मांग है कि आयुर्वेद को राष्ट्रीय पैथी बनानी चाहिये क्योंकि जनता एलोपैथी दवाओं के दुष्प्रभाव से त्रस्त हो चुकी है।

विशिष्ट अतिथि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व संकायाध्यक्ष, आयुर्वेद संकाय, प्रो0 रामहर्ष सिंह ने कहा कि वर्तमान में आयुर्वेद का पूरा विश्व लोहा मान रहा है, नई पीढ़ी विश्व पटल पर आयुर्वेद के पुनर्स्थापन के लिये पूरी तरह तैयार है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि महोदय ने राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित अखिल भारतीय आयुर्वेद स्नातक छात्र निबन्ध प्रतियोगिता 2015 के विजेता छात्रों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। प्रथम पुरस्कार विजेता चौधरी ब्रह्म प्रकाश आयुर्वेद चरक संस्थान नई दिल्ली के छात्र विकास मिश्रा को 15000/–रू0 नगद एवं स्वर्ण पदक, द्वितीय पुरस्कार विजेता राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय वाराणसी की छात्रा प्रिती पाण्डेय को रजत पदक एवं 11000/–रू0 नगद, एवं तृतीय पुरस्कार विजेता राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय वाराणसी के अंकुर हिम्मत सिंहका को कांस्य पदक एवं 7500/– प्रदान किया गया। आयोजन अध्यक्ष डा0 के0 के0 द्विवेदी ने विश्व आयुर्वेद परिषद द्वारा पूरे देश में चलाये जा रहे विविध कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला एवं सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डा0 विजय कुमार राय ने किया।

कार्यक्रम में वाराणसी जनपद के वैद्य एवं आयुर्वेद चिकित्सक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विश्व आयुर्वेद परिषद के वैद्य राजीव शुक्ला, डा0 सुभाष श्रीवास्तव, वैद्य उमेश दत्त पाठक, डा0 अजय पाण्डेय, डा0 आशुतोष कुमार यादव,डा0 पी0एल0 शंखुआ, डा0 अश्विनी गुप्ता, डा0 अजय कुमार, डा0 रानी सिंह, डा0 महेश नारायण गुप्ता, डा0 मनीष मिश्रा, डा0 अनुभा श्रीवास्तव, डा0 टीना सिंघल, डा0 विजय लक्ष्मी, डा0 शालिनी राय, डा0 आनन्द विद्यार्थी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन अक्षय पाण्डेय ने किया और धन्यवाद ज्ञापन आयोजन सचिव डा0 रमेश कुमार गुप्ता ने किया।

जबलपुर में भगवान् धन्वन्तरि जयन्ती एवं संगोष्ठी सम्पन्न

विश्व आयुर्वेद परिषद् जबलपुर महानगर के तत्वाधान में दिनांक 09 नवम्बर 2015 को महाराष्ट्र हाईस्कूल, जबलपुर में चिकित्सा के आदि देव भगवान् धन्वन्तरी की जयन्ती एवं आयुर्वेद पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि– श्री गुलशन बामरा जी (जबलपुर संभागयुक्त), अध्यक्षता डॉ. डी. पी. लोकवाणी जी (कुलपति– मेडिकल आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर), विशिष्ठ अतिथि के रूप में डॉ मुरली अग्रवाल जी (मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ अधिकारी) तथा साथ में डॉ पवन स्थापक, डॉ अर्चना मरावी (जिला आयुष अधिकारी), डॉ रविकांत श्रीवास्तव (प्राचार्य–आयुर्वेद महाविद्यालय जबलपुर) एवं डॉ. जी द्विवेदी (संभागीय आयुष अधिकारी) डॉ रवि श्रीवास्तव (प्रदेश महासचिव विश्व आयुर्वेद परिषद्, मध्यप्रदेश (रीडर–आयुर्वेद महाविद्यालय जबलपुर) मंच पर मंचासीन थे।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम दीप–प्रज्ज्वलन के साथ भगवन धन्वन्तरि जी का पूजन किया गया एवं उपस्थित जनसमूह द्वारा धन्वन्तरि स्तवन का पाठ किया गया उसके बाद अतिथियों का परिचय एवं स्वागत किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुये संभागायुक्त श्री गुलशन बामरा जी ने कहा कि आयुर्वेद विज्ञानं सम्मत है एवं इसमें सभी रोगो के उपचार की क्षमता है बस आवश्यकता है इसके सही प्रस्तुतीकरण की। डॉ मुरली अग्रवाल जी ने कहा कि आयुर्वेद एक महान विज्ञान है, जरुरत है कि आयुर्वेद चिकित्सक आत्मविश्वास के साथ कार्य करें, डॉ पवन स्थापक जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आयुर्वेद भारतीय परम्परा की महान धरोहर है इसे सहेज कर इसके विस्तार की जिमेदारी संस्था ने ली है जो एक सहरानीय प्रयास है, डॉ लोकवाणी जी द्वारा कहा गया कि आयुर्वेद के विकास में हम सभी अपना योगदान दे, डॉ रविकांत श्रीवास्तव जी ने अपने विचार व्यक्त किया कि आयुर्वेद अपने विकास पथ पर अग्रसर है।

कार्यक्रम में डॉ निधि श्रीवास्तव (रीडर–आयुर्वेद महाविद्यालय जबलपुर) द्वारा लिखित ''मर्म शरीर विज्ञान'' पुस्तक का विमोचन हुआ, डॉ. बी. डी. पटेल जी द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया, डॉ. के. के. विश्वकर्मा जी द्वारा संस्था का परिचय दिया गया, डॉ. विवेक सिंह ठाकुर द्वारा भगवान धनवंतरी जी के बारे में विचार रखा, मंच संचालन डॉ. सुमित श्रीवास्तव द्वारा तथा आभार प्रदर्शन डॉ. रवि श्रीवास्तव द्वारा दिया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ. मुकेश पाण्डेय, डॉ. कमलेश गुप्ता, डॉ. प्रभात श्रीवास्तव, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. बृजेश नैरोजी , डॉ. आकाश गुप्ता एवं संजय दुल्हानी आदि का विशेष सहयोग रहा।

देश के विभिन्न प्रान्तों में धन्वन्तरि जयन्ती की झलकियाँ